P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-4 (Part-1) May-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्याओं पर उनके गृह वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

पुष्पेन्द्र सिंह
शोधकर्ता
शिक्षाशास्त्र विभाग
हे0न0ब0 केन्द्रीय
विश्वविद्यालय, श्रीनगर,
गढ़वाल, भारत

ए0के0 नौटियाल
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र विभाग
हे0न0ब0 केन्द्रीय
विश्वविद्यालय, श्रीनगर,
गढ़वाल, भारत

सारांश

वर्तमान शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों तथा बालिकाओं की व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक–संवेगात्मक तथा शैक्षिक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना है। इस शोध में वर्णनात्मक शोधविधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध के लिए यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि द्वारा हरिद्वार जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रुप में किया गया। न्यादर्श में 100 बालकों तथा 100 बालिकाओं को सम्मिलित किया गया। प्रदत्तों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन तथा सहसम्बन्ध गुणांक द्वारा किया गया। बालकों तथा बालिकाओं की व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक–संवेगात्मक तथा शैक्षिक समस्याओं का स्तर औसत पाया गया। बालिकाओं की व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक–संवेगात्मक तथा शैक्षिक समस्याओं का स्तर बालकों की तुलना में उच्च पाया गया। बालकों तथा बालिकाओं की व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक–संवेगात्मक पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव पाया गया। परन्तु बालकों तथा बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

मुख्य शब्द : व्यक्तिगत समस्याएं, पारिवारिक समस्याए, सामाजिक–संवेगात्मक समस्याए, शैक्षिक समस्याएं एवं गृह वातावरण

प्रस्तावना

परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है जहाँ बालक को सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान की जाती है। परिवार ही जन्म से किशोरावस्था तक बालक का विकास करता है। बालकों को प्रेम, स्नेह, सहयोग, सेवा, त्याग आदि उच्च गुणों का पाठ परिवार से ही मिलता है। शिक्षा की दृष्टि से पारिवारिक वातावरण बालक के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अतः घर में अनुकूल वातावरण और उत्तम मनोवैज्ञानिक वातावरण का होना आवश्यक है। बालक के समुचित विकास के लिए परिवार में भावनात्मक वातावरण का निर्माण एवं सुरक्षा दोनों आवश्यक है। जिस परिवार में बच्चे को स्नेह मिलता है, उस बालक का भावनात्मक विकास भी अपेक्षाकृत अधिक अच्छा होता है और वे अधिक भावात्मक सुरक्षा का अनुभव करते हैं।

साहित्यावलोकन

परिवार के वातावरण के अनुसार बालक के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। राधाकृष्णन् और राहगीर (1992) के अनुसार, *''परिवार का वातावरण, सदस्यों का आचरण, शिक्षा स्तर, पारिवारिक संरक्षण, सहयोग एवं तौर–तरीकों से बालक का विकास प्रभावित होता है।''* अनेक शैक्षिक अनुसंधानों से सिद्ध हुआ है कि परिवार व घर का वातावरण भी बालक के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है। श्रीवास्तव, ज्योति और श्रीवास्तव, सुषमा (2002) द्वारा किये गये शोध में किशोरों के आकांक्षा स्तर पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पाया गया। सिंह (2011) तथा यशोदा एवं देवी (2016) द्वारा किये गये अध्ययन में विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता पर गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव पाया गया। शिवाने (2011) एवं राव व रेड्डी (2016) ने अपने शोध में विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव पाया।

इला आर0ई0, ओडोक, ए0ओ0 एवं इला जी0ई0 (2015), पल्लबी एवं चौधरी (2015), देव (2016) एवं मीनू (2016) द्वारा किये गये शोध में छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन पर परिवार के वातावरण का सार्थक प्रभाव पाया गया। पूनिया एवं अनीता (2017) तथा महाजन व काट्स (2018) के अध्ययन में विद्यार्थियों के समायोजन पर गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव पाया गया। उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि बालक का गृह वातावरण उसके जीवन को पूर्ण

रूप से प्रभावित करता है जिसे अनेक शोधकर्ताओं ने अपने शोध अध्ययनों से स्पष्ट भी किया है। परन्तु शोधार्थी के समक्ष ऐसा कोई भी शोध कार्य नहीं आया जिसमें किशोरों की समस्याओं पर उनके गृह वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया गया हो। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों तथा बालिकाओं समस्याओं पर उनके गृह वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करने का निश्चय किया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है :–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्याओं का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों एवं बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं पर उनके गृह वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों एवं बालिकाओं की परिवारिक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों एवं बालिकाओं की सामाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों एवं बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध में निम्न परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया गया है :–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों की परिवारिक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की परिवारिक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों की सामाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की सामाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।
7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों की शैक्षिक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।
8. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध हेतु वर्णनात्मक शोधविधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्श प्रविधि

प्रस्तुत शोध के लिए यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि द्वारा हरिद्वार जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रुप में किया गया। न्यादर्श में 100 बालकों तथा 100 बालिकाओं को सम्मिलित किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा सहसम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया है।

व्याख्या एवं विश्लेषण

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्न प्रकार है:

सारणी – 1

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्याओं का मध्यमान तथा मानक विचलन

समस्याएं	बालक		बालिका	
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन
व्यक्तिगत	25.98	3.71	31.06	4.49
पारिवारिक	27.45	3.41	29.17	4.32
सामाजिक–संवेगात्मक	26.18	3.37	30.47	2.60
शैक्षिक	13.42	2.45	15.46	2.29

सारणी–1 से स्पष्ट है कि बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं, पारिवारिक समस्याओं, सामाजिक–संवेगात्मक समस्याओं तथा शैक्षिक समस्याओं का मध्यमान क्रमशः 25. 98, 27.45, 26.18 तथा 13.42 है। मध्यमान से स्पष्ट है कि बालकों की सभी समस्याओं का औसत स्तर पाया गया है। मध्यमान से यह भी स्पष्ट है कि बालकों में सबसे अधिक पारिवारिक समस्याएं तथा सबसे कम शैक्षिक समस्याएं पायी गयी हैं। बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं, पारिवारिक समस्याओं, सामाजिक–संवेगात्मक समस्याओं तथा शैक्षिक समस्याओं का मध्यमान क्रमशः 31. 06, 29.17, 30.47 तथा 15.46 है। मध्यमान से स्पष्ट है कि बालिकाओं की सभी समस्याओं का औसत स्तर पाया गया है। मध्यमान से यह भी स्पष्ट है कि बालिकाओं में सबसे अधिक व्यक्तिगत समस्याएं तथा सबसे कम शैक्षिक समस्याएं पायी गयी हैं।

सारणी से स्पष्ट है कि बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं, पारिवारिक समस्याओं, सामाजिक–संवेगात्मक समस्याओं तथा शैक्षिक समस्याओं का स्तर बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं, पारिवारिक समस्याओं,

सामाजिक–संवेगात्मक समस्याओं तथा शैक्षिक समस्याओं से उच्च पाया गया है।

सारणी – 2

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव हेतु सहसम्बन्ध गुणांक

चर	गृह वातावरण	सहसम्बन्ध गुणांक	परिणाम
व्यक्तिगत समस्याएं	स्वीकृत गृह वातावरण	–0.330**	सार्थक
	निरंकुश गृह वातावरण	–0.174	असार्थक
	अति संरक्षित गृह वातावरण	–0.215*	सार्थक
	सहनशील गृह वातावरण	0.325**	सार्थक
	अस्वीकृत गृह वातावरण	–0.171	असार्थक

***** = 0.01 सार्थकता स्तर*** **बालकों की संख्या = 100**

**** = 0.05 सार्थकता स्तर*** **आवृत्ति अंश = 98**

सारणी–2 से स्पष्ट है कि बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं और स्वीकृत गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.330 प्राप्त हुआ है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं और स्वीकृत गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। इससे स्पष्ट है कि गृह में स्वीकृति अधिक प्राप्त होने पर बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं में कमी तथा स्वीकृति कम प्राप्त होने पर बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं में वृद्धि होती है।

बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं और निरंकुश गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.174 प्राप्त हुआ है, जो बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं और निरंकुश गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं पर निरंकुश गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं और अति संरक्षित गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.215 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं और अति संरक्षित गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। इससे स्पष्ट है कि गृह में अति संरक्षित वातावरण अधिक प्राप्त होने पर बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं में कमी तथा अति संरक्षित वातावरण कम प्राप्त होने पर बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं में वृद्धि होती है।

बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं और सहनशील गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.325 प्राप्त हुआ है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं और सहनशील गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। इससे स्पष्ट है कि गृह में सहनशील वातावरण उच्च प्राप्त होने पर बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं में वृद्धि तथा सहनशील वातावरण कम प्राप्त होने पर बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं में कमी होती है।

बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं और अस्वीकृत गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.171 प्राप्त हुआ है, जो बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं और अस्वीकृत गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं पर अस्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

अतः परिकल्पना कि *''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं पर गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है''* मुख्य रूप से निरस्त तथा आंशिक रूप से स्वीकृत की जाती है।

सारणी – 3

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव हेतु सहसम्बन्ध गुणांक

चर	गृह वातावरण	सहसम्बन्ध गुणांक	परिणाम
व्यक्तिगत समस्याएं	स्वीकृत गृह वातावरण	0.209*	सार्थक
	निरंकुश	–0.067	असार्थक
	अति संरक्षित	0.071	असार्थक
	सहनशील	–0.105	असार्थक
	अस्वीकृत	0.377**	सार्थक

***** = 0.01 सार्थकता स्तर*** **बालिकाओं की संख्या = 100**

**** = 0.05 सार्थकता स्तर*** **आवृत्ति अंश = 98**

सारणी–3 से स्पष्ट है कि बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं और स्वीकृत गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.209 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं और स्वीकृत गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता

है। इससे स्पष्ट है कि गृह में स्वीकृति अधिक प्राप्त होने पर बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं में वृद्धि तथा स्वीकृति कम प्राप्त होने पर बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं में कमी होती है।

बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं और निरंकुश गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.067 प्राप्त हुआ है, जो बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं और निरंकुश गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं पर निरंकुश गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं और अति संरक्षित गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.071 प्राप्त हुआ है, जो बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं और अति संरक्षित गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं पर अति संरक्षित गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं और सहनशील गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.105 प्राप्त हुआ है, जो बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं और सहनशील गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं पर सहनशील गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं और अस्वीकृत गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.377 प्राप्त हुआ है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं और अस्वीकृत गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। इससे स्पष्ट है कि गृह में अस्वीकृति अधिक प्राप्त होने पर बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं में वृद्धि तथा अस्वीकृति कम प्राप्त होने पर बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं में कमी होती है।

अतः परिकल्पना कि *''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं पर गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है''* आंशिक रूप से निरस्त तथा मुख्य रूप से स्वीकृत की जाती है।

सारणी – 4

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों की पारिवारिक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव हेतु सहसम्बन्ध गुणांक

चर	गृह वातावरण	सहसम्बन्ध गुणांक	परिणाम
पारिवारिक समस्याएं	स्वीकृत गृह वातावरण	–0.125	असार्थक
	निरंकुश	0.197*	सार्थक
	अति संरक्षित	0.032	असार्थक
	सहनशील	–0.026	असार्थक
	अस्वीकृत	–0.014	असार्थक

**** = 0.05 सार्थकता स्तर***

बालकों की संख्या = 100

आवृत्ति अंश = 98

सारणी–4 से स्पष्ट है कि बालकों की पारिवारिक समस्याओं और स्वीकृत गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.125 प्राप्त हुआ है, जो बालकों की पारिवारिक समस्याओं और स्वीकृत गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालकों की पारिवारिक समस्याओं पर स्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालकों की पारिवारिक समस्याओं और निरंकुश गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.197 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक बालकों की पारिवारिक समस्याओं और निरंकुश गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। इससे स्पष्ट है कि गृह में निरंकुश वातावरण अधिक प्राप्त होने पर बालकों की पारिवारिक समस्याओं में वृद्धि तथा निरंकुश वातावरण कम प्राप्त होने पर बालकों की पारिवारिक समस्याओं में कमी होती है।

बालकों की पारिवारिक समस्याओं और अति संरक्षित गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.032 प्राप्त हुआ है, जो बालकों की पारिवारिक समस्याओं और अति संरक्षित गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालकों की पारिवारिक समस्याओं पर अति संरक्षित गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालकों की पारिवारिक समस्याओं और सहनशील गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.026 प्राप्त हुआ है, जो बालकों की पारिवारिक समस्याओं और सहनशील गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालकों की पारिवारिक समस्याओं पर सहनशील गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालकों की पारिवारिक समस्याओं और अस्वीकृत गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.014 प्राप्त हुआ है, जो बालकों की पारिवारिक समस्याओं और

अस्वीकृत गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालकों की पारिवारिक समस्याओं पर अस्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

अतः परिकल्पना कि *"माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों की पारिवारिक समस्याओं पर गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है"* आंशिक रूप से निरस्त तथा मुख्य रूप से स्वीकृत की जाती है।

सारणी – 5
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव हेतु सहसम्बन्ध गुणांक

चर	गृह वातावरण	सहसम्बन्ध गुणांक	परिणाम
पारिवारिक समस्याएं	स्वीकृत गृह वातावरण	0.064	असार्थक
	निरंकुश	0.228*	सार्थक
	अति संरक्षित	–0.218*	सार्थक
	सहनशील	0.035	असार्थक
	अस्वीकृत	–0.005	असार्थक

**** = 0.05 सार्थकता स्तर***

बालिकाओं की संख्या = 100
आवृत्ति अंश = 98

सारणी–5 से स्पष्ट है कि बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं और स्वीकृत गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.064 प्राप्त हुआ है, जो बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं और स्वीकृत गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं पर स्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं और निरंकुश गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.228 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं और निरंकुश गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। इससे स्पष्ट है कि गृह में निरंकुश वातावरण अधिक प्राप्त होने पर बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं में वृद्धि तथा निरंकुश वातावरण कम प्राप्त होने पर बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं में कमी होती है।

बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं और अति संरक्षित गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.218 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं और अति संरक्षित गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। इससे स्पष्ट है कि गृह में अति संरक्षित वातावरण अधिक प्राप्त होने पर बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं में कमी तथा अति संरक्षित वातावरण कम प्राप्त होने पर बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं में वृद्धि होती है।

बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं और सहनशील गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.035 प्राप्त हुआ है, जो बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं और सहनशील गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं पर सहनशील गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं और अस्वीकृत गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.005 प्राप्त हुआ है, जो बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं और अस्वीकृत गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं पर अस्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

अतः परिकल्पना कि *"माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं पर गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है"* आंशिक रूप से निरस्त तथा मुख्य रूप से स्वीकृत की जाती है।

सारणी – 6
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों की सामाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव हेतु सहसम्बन्ध गुणांक

चर	गृह वातावरण	सहसम्बन्ध गुणांक	परिणाम
सामाजिक–संवेगात्मक समस्याएं	स्वीकृत गृह वातावरण	0.051	असार्थक
	निरंकुश	–0.102	असार्थक
	अति संरक्षित	–0.199*	सार्थक
	सहनशील	0.065	असार्थक
	अस्वीकृत	0.034	असार्थक

**** = 0.05 सार्थकता स्तर***

बालकों की संख्या = 100

आवृत्ति अंश = 98

सारणी–6 से स्पष्ट है कि बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और स्वीकृत गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.051 प्राप्त हुआ है, जो बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और स्वीकृत गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर स्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और निरंकुश गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.102 प्राप्त हुआ है, जो बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और निरंकुश गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर निरंकुश गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और अति संरक्षित गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.199 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और अति संरक्षित गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। इससे स्पष्ट है कि गृह में अति संरक्षित वातावरण अधिक प्राप्त होने पर बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं में कमी तथा अति संरक्षित वातावरण कम प्राप्त होने पर बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं में वृद्धि होती है।

बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और सहनशील गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.065 प्राप्त हुआ है, जो बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और सहनशील गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर सहनशील गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और अस्वीकृत गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.034 प्राप्त हुआ है, जो बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और अस्वीकृत गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर अस्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

अतः परिकल्पना कि *''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है''* आंशिक रूप से निरस्त तथा मुख्य रूप से स्वीकृत की जाती है।

सारणी – 7

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की सामाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव हेतु सहसम्बन्ध गुणांक

चर	गृह वातावरण	सहसम्बन्ध गुणांक	परिणाम
सामाजिक–संवेगात्मक समस्याएं	स्वीकृत गृह वातावरण	0.055	असार्थक
	निरंकुश	–0.196*	सार्थक
	अति संरक्षित	0.142	असार्थक
	सहनशील	–0.091	असार्थक
	अस्वीकृत	0.018	असार्थक

**** = 0.05 सार्थकता स्तर***

इबालिकाओं की संख्या = 100

आवृत्ति अंश = 98

सारणी–7 से स्पष्ट है कि बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और स्वीकृत गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.055 प्राप्त हुआ है, जो बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और स्वीकृत गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर स्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और निरंकुश गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.196 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और निरंकुश गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। इससे स्पष्ट है कि गृह में निरंकुश वातावरण अधिक प्राप्त होने पर बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं में कमी तथा निरंकुश वातावरण कम प्राप्त होने पर बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं में वृद्धि होती है।

बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और अति संरक्षित गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.142 प्राप्त हुआ है, जो बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और अति संरक्षित गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालिकाओं की

समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर अति संरक्षित गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और सहनशील गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.091 प्राप्त हुआ है, जो बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और सहनशील गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर सहनशील गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और अस्वीकृत गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.018 प्राप्त हुआ है, जो बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं और अस्वीकृत गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर अस्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

अतः परिकल्पना कि *''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है''* आंशिक रूप से निरस्त तथा मुख्य रूप से स्वीकृत की जाती है।

सारणी – 8

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों की शैक्षिक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव हेतु सहसम्बन्ध गुणांक

चर	गृह वातावरण	सहसम्बन्ध गुणांक	परिणाम
शैक्षिक समस्याएं	स्वीकृत गृह वातावरण	–0.113	असार्थक
	निरंकुश	0.010	असार्थक
	अति संरक्षित	0.049	असार्थक
	सहनशील	–0.017	असार्थक
	अस्वीकृत	–0.101	असार्थक

बालकों की संख्या = 100

आवृत्ति अंश = 98

सारणी–8 से स्पष्ट है कि बालकों की शैक्षिक समस्याओं और स्वीकृत गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.113 प्राप्त हुआ है, जो बालकों की शैक्षिक समस्याओं और स्वीकृत गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालकों की शैक्षिक समस्याओं पर स्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालकों की शैक्षिक समस्याओं और निरंकुश गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.010 प्राप्त हुआ है, जो बालकों की शैक्षिक समस्याओं और निरंकुश गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालकों की शैक्षिक समस्याओं पर निरंकुश गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालकों की शैक्षिक समस्याओं और अति संरक्षित गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.049 प्राप्त हुआ है, जो बालकों की शैक्षिक समस्याओं और अति संरक्षित गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालकों की शैक्षिक समस्याओं पर अति संरक्षित गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालकों की शैक्षिक समस्याओं और सहनशील गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.017 प्राप्त हुआ है, जो बालकों की शैक्षिक समस्याओं और सहनशील गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालकों की शैक्षिक समस्याओं पर सहनशील गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालकों की शैक्षिक समस्याओं और अस्वीकृत गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.101 प्राप्त हुआ है, जो बालकों की शैक्षिक समस्याओं और अस्वीकृत गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालकों की शैक्षिक समस्याओं पर अस्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

अतः परिकल्पना कि *''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों की शैक्षिक समस्याओं पर गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है''* पूर्ण रूप से स्वीकृत की जाती है।

सारणी – 9

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव हेतु सहसम्बन्ध गुणांक

चर	गृह वातावरण	सहसम्बन्ध गुणांक	परिणाम
शैक्षिक समस्याएं	स्वीकृत गृह वातावरण	–0.060	असार्थक
	निरंकुश	0.075	असार्थक

	अति संरक्षित	–0.018	असार्थक
	सहनशील	–0.016	असार्थक
	अस्वीकृत	0.034	असार्थक

बालिकाओं की संख्या = 100
आवृत्ति अंश = 98

सारणी–8 से स्पष्ट है कि बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं और स्वीकृत गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.060 प्राप्त हुआ है, जो बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं और स्वीकृत गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं पर स्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं और निरंकुश गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.075 प्राप्त हुआ है, जो बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं और निरंकुश गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं पर निरंकुश गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं और अति संरक्षित गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.018 प्राप्त हुआ है, जो बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं और अति संरक्षित गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं पर अति संरक्षित गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं और सहनशील गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक –0.016 प्राप्त हुआ है, जो बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं और सहनशील गृह वातावरण के मध्य ऋणात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं पर सहनशील गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं और अस्वीकृत गृह वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.034 प्राप्त हुआ है, जो बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं और अस्वीकृत गृह वातावरण के मध्य धनात्मक तथा अति निम्न सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है परन्तु यह सम्बन्ध 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं पर अस्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

अतः परिकल्पना कि *"माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं पर गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है"* पूर्ण रूप से स्वीकृत की जाती है।

परिणाम

प्रस्तुत शोध से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त किये गये हैं :–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों तथा बालिकाओं की सभी समस्याओं यथा व्यक्तिगत समस्याओं, पारिवारिक समस्याओं, सामाजिक–संवेगात्मक समस्याओं तथा शैक्षिक समस्याओं का औसत स्तर पाया गया है।
2. बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं, पारिवारिक समस्याओं, सामाजिक–संवेगात्मक समस्याओं तथा शैक्षिक समस्याओं का स्तर बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं, पारिवारिक समस्याओं, सामाजिक–संवेगात्मक समस्याओं तथा शैक्षिक समस्याओं से उच्च पाया गया है।
3. बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं पर स्वीकृत गृह वातावरण तथा अति संरक्षित गृह वातावरण का ऋणात्मक प्रभाव पाया गया है। इसके विपरीत बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं पर सहनशील गृह वातावरण का धनात्मक प्रभाव पाया गया है। बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं पर निरंकुश गृह वातावरण और अस्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया है।
4. बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं पर स्वीकृत गृह वातावरण और अस्वीकृत गृह वातावरण का धनात्मक प्रभाव पाया गया है। परन्तु बालिकाओं की व्यक्तिगत समस्याओं पर निरंकुश गृह वातावरण, अति संरक्षित गृह वातावरण तथा सहनशील गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया है।
5. बालकों की पारिवारिक समस्याओं पर निरंकुश गृह वातावरण का धनात्मक प्रभाव पाया गया है। परन्तु बालकों की पारिवारिक समस्याओं पर स्वीकृत गृह वातावरण, अति संरक्षित गृह वातावरण, सहनशील गृह वातावरण और अस्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया है।
6. बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं पर निरंकुश गृह वातावरण और अति संरक्षित गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव पाया गया है। परन्तु बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं पर स्वीकृत गृह वातावरण, सहनशील गृह वातावरण और अस्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया है।
7. बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर अति संरक्षित गृह वातावरण का ऋणात्मक प्रभाव पाया गया है। परन्तु बालकों की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर स्वीकृत गृह वातावरण, निरंकुश गृह वातावरण, सहनशील गृह वातावरण और अस्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया है।
8. बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर निरंकुश गृह वातावरण का ऋणात्मक प्रभाव पाया

गया है। परन्तु बालिकाओं की समाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर स्वीकृत गृह वातावरण, अति संरक्षित गृह वातावरण, सहनशील गृह वातावरण और अस्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया है।

9. बालकों तथा बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं पर स्वीकृत गृह वातावरण, निरंकुश गृह वातावरण, अति संरक्षित गृह वातावरण, सहनशील गृह वातावरण और अस्वीकृत गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया है।

शोध के निहितार्थ

प्रस्तुत शोध कार्य माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों तथा बालिकाओं की व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक–संवेगात्मक तथा शैक्षिक समस्याओं पर उनके गृह वातावरण के प्रभाव से सम्बन्धित है। परिणामों में बालकों में सबसे अधिक पारिवारिक समस्याएं तथा सबसे कम शैक्षिक समस्याएं पायी गयी हैं। बालिकाओं में सबसे अधिक व्यक्तिगत समस्याएं तथा सबसे कम शैक्षिक समस्याएं पायी गयी हैं। इस सन्दर्भ में यह आवश्यक है कि बालकों तथा बालिकाओं को उचित तथा सन्तुलित वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए जिससे वे परिवार के सभी सदस्यों से अपनी समस्याओं के विषय में बात कर सकें। शोध के परिणामों में बालिकाओं की व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक–संवेगात्मक तथा शैक्षिक का स्तर बालकों की तुलना में उच्च पाया गया है। साथ ही बालकों तथा बालिकाओं की व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक–संवेगात्मक समस्याओं पर गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव पाया गया है। परन्तु उनकी शैक्षिक समस्याओं पर गृह वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया है।

इस सन्दर्भ में माता–पिता के लिए यह आवश्यक है कि वे व्यक्तिगत रूप से अपने बालकों तथा बालिकाओं के व्यवहार पर पूरी तरह से ध्यान रखें तथा व्यवहारों में परिवर्तन होने पर तुरन्त उसका कारण जानने का प्रयास करे क्योंकि यह पहरवर्तन किसी समस्या के कारण हो सकता है। साथ ही माता–पिता को आरम्भ से ही अपने बच्चों को समस्याओं का सामना तथा उनका समाधान करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे वे सदैव अपनी समस्याओं से निपटना सीख सकेंगे। परिवार में सभी सदस्यों के मध्य प्रेम, सहानुभूति तथा सहयोग की भावना होनी चाहिए। वर्तमान समय में जहाँ प्रत्येक व्यक्ति ने विभिन्न गेजेट्स के प्रयोग तक ही स्वयं को सीमित कर लिया है वहाँ आवश्यक है कि सभी सदस्य एक–दूसरे के लिए समय निकाले तथा सभी की भावनाओं को समझने का प्रयास करें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

इला आर0ई0, ओडोक, ए0ओ0 एवं इला जी0ई0 (2015). इनफ्लुएन्स ऑफ फैमिली साइड एण्ड फैमिली टाइप ऑन एकेडेमिक परफार्मेन्स ऑफ स्टूडेन्ट्स इन गवर्नमेन्ट इन कैलावर म्यूनिस्पिलटी, क्रास रीवर स्टेट, नाइजीरिया, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमनटीज, सोशल साइंस एण्ड एजूकेशन, 2(4), 108–114

देव (2016). उदृधत स्टडी ऑफ होम इन्वायरमेन्ट एण्ड एडजेस्टमेन्ट अमंग एडोलोसेन्टस ऑफ वर्किंग एण्ड नान वर्किंग मदर्स, द्वारा महाजन व कॉट्स, 2018, एजुकेशनल क्वैस्टः एन इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड अपलाइड सोशल साइन्स, 9(2), 175

पूनिया एवं अनीता (2017). इफैक्ट ऑफ फैमिली क्लाइमेट ऑन द एडजेस्टमेन्ट ऑफ चिल्डन विद स्पेशल नीड्स, एजुकेशनल क्वैस्टः एन इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड अपलाइड सोशल साइन्स, 8(3), 727–730

पल्लबी एवं चौधरी (2015). उदृधत स्टडी ऑफ होम इन्वायरमेन्ट एण्ड एडजेस्टमेन्ट अमंग एडोलोसेन्टस ऑफ वर्किंग एण्ड नान वर्किंग मदर्स, द्वारा महाजन व कॉट्स, 2018, एजुकेशनल क्वैस्टः एन इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड अपलाइड सोशल साइन्स, 9(2), 175

महाजन व कॉट्स (2018). स्टडी ऑफ होम इन्वायरमेन्ट एण्ड एडजेस्टमेन्ट अमंग एडोलोसेन्टस ऑफ वर्किंग एण्ड नान वर्किंग मदर्स, एजुकेशनल क्वैस्टः एन इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड अपलाइड सोशल साइन्स, 9(2), 175–179

मीनू (2016). उदृधत स्टडी ऑफ होम इन्वायरमेन्ट एण्ड एडजेस्टमेन्ट अमंग एडोलोसेन्टस ऑफ वर्किंग एण्ड नान वर्किंग मदर्स, द्वारा महाजन व कॉट्स, 2018, एजुकेशनल क्वैस्टः एन इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड अपलाइड सोशल साइन्स, 9(2), 175

यशोदा एवं देवी (2015). इन्फल्यूऐन्स ऑफ होम इन्वायरमेन्ट एण्ड टाइप ऑफ स्कूल ऑन इमोशनल मैच्योरिटी ऑफ एडोलोसेन्टस, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इन्वायरमेन्ट, इकॉलॉजी, फैमिली एण्ड अर्बन स्टडीज, 6(4), 9–14

राव एवं रेड्डी (2016). इम्पैक्ट ऑफ स्कूल इन्वायरमेन्ट, होम इन्वायरमेन्ट एण्ड मेन्टल हैल्थ स्टेट्स ऑन अचीवमेन्ट मोटिवेशन अमंग हाई स्कूल स्टूडेन्टस, पेरिपेक्स– इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च, 5(4), 426–429

शिवाने (2011). टू स्टडी द फैमिली इन्वायरमेन्ट एण्ड मेन्टल हैल्थ आफ द ट्राइबल एण्ड अर्बन स्टूडेन्टस, इण्डियन स्ट्रीम्स रिसर्च जर्नल, 1(4), 126–129

सिंह (2011). इमोशनल मैच्योरिटी अमंग सीनियर सेकेन्डरी स्कूल स्टूडेन्टस इन रिलेशन टू देयर सैल्फ–इस्टीम, होम इन्वायरमेन्ट एण्ड मेन्टल हैल्थ, पी–एच0 डी0, शिक्षाशास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा